Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, General Impact Factor : 2.3982, Volume 08, No. 01, January, 2018, pp. 586-587

f'k{kk dk cnyrk Lo:i ¼lwpuk ,oa lapkj izkS|ksfxdh dk fo'ks"k lanHkZ esa½

Mk- e/kq [k.Msyoky*

किसी भी देश का वर्तमान एवं भविष्य उस देश में रहने वाले लोगों की शिक्षा–दीक्षा पर निर्भर करता है। आम–तौर पर भारत जैसे विशाल देश में जहां पर विभिन्न धर्मों के अर्न्तगत अनेक जातियों के लोग रहते है, जिनका खान–पान, वेशभूषा, क्षेत्र सब अलग–अलग है। जो विश्व में जनसंख्या के मामले में दूसरा और क्षेत्रफल के मामले में सातवां स्थान रखता है। प्राणियों की श्रेणी में से मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ प्राणी बनाने का श्रेय शिक्षा को दिया जाता है। शिक्षा जीवन की आवश्यकता है। शिक्षा ही समाज का अस्तित्व निर्धारित करती है। शिक्षा मानव की अर्न्तनिहित शक्तियों का विकास करती है। जन्म के समय बालक असामाजिक एवं असहाय होता है। उसकी न तो कोई संस्कृति होती है न ही आदर्श, किन्तु जैसे–जैसे वह वड़ा होता जाता है वह सामाजिक प्राणी बन जाता है। धीरे–धीरे उसमें सामाजिक परिवक्वता आती है और वह अपने को समाज द्वारा वनाये गये नियमों के अनुरूप ढालता है।

f'k{kk dk cnyrk Lo:i%

21 वीं शताब्दी की दहलीज पर सामाजिक आत्ममंथन के लिए जितना प्रासांगिक है उतना ही महत्वपूर्ण भी है, क्योकिं बदलते परिभेष में आधुनिक वनाम वर्तमान शिक्षा पद्धति एक ऐसे दर्पण के समान है जिसमें हम जितना पास आकर निहारते है अपना प्रतिबिम्व उतना ही धुंधला दिखाई देता है। शिक्षा व्यक्ति की नैसर्गिक प्रवृत्तियों को शोधन एवं रूपान्तरिकरण करके उसे समाज का सक्रिय सदस्य बनाती है। जिससे वह अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह कुशलतापूर्वक कर सकता है। प्राचीन काल में शिक्षा गुरूकुल में गुरू के सानिध्य में रहकर ही पूर्ण की जाती थी। धीरे–धीरे इस प्रणाली में परिवर्तन होता गया। तथा गुरू के साथ–साथ पुस्तकों का स्थान भी महत्वपूर्ण होता गया। 20वीं शताब्दी के पूर्वाद्ध तक सम्पूर्ण विश्व औद्योगिक क्रान्ति से संचालित होता रहा परन्तु इसके बाद से विश्व व्यवस्था में अनेक क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए।

शिक्षण–अधिगम की परिस्थिति में छात्रों के भाग्य का विकास एवं अपेक्षित परिवर्तन उनकी कक्षाओं के माध्यमों से हो रहा है। हमारा विश्वास है कि यह कोई चमत्कारोक्ति नहीं है। विज्ञान और सिर्फ विज्ञान पर आधारित इस दुनियां में शिक्षा ही लोगों को खुशहाली, कल्याण और सुरक्षा के स्तर पर निर्धारण करती है। हमारे विद्यालय और महाविद्यालयों से निकलने वाले छात्रों की योग्यता और संख्या पर ही राष्ट्रीय कुल निर्माण के इस महत्वपूर्ण कार्य की सफलता निर्भर करेगी, जिसका प्रमुख उद्देश्य हमारे रहन–सहन का स्तर ऊंचा उठाता है। समय का चक्र निरन्तर गतिमान है। आज की शिक्षा में शिक्षक अपने को केवल पुस्तकीय ज्ञान या पाठ्यक्रम तक ही सीमित नहीं रख सकता। शिक्षण प्रक्रिया में आज ऐसी शिक्षण पीढ़ी का नवनिर्माण करना आवश्यक है जिसका न केवल अपने विषय पर एकाधिकार हो बल्कि वह विद्यार्थियों की सभी बौद्धिक जिज्ञासा को परिपूर्ण करता हो, उसे अपने शिक्षण में दूरदर्शन, कम्प्यूटर, इन्टरनेट, सैटेलाईट, ई–मेल, फैक्स आदि आधुनिक सूचना माध्यम से अपने को परिपूर्ण रखे तथा शिक्षण अभ्यास में नये–नये सूचना के संसाधनों से अपने को परिपूर्ण रखे। शिक्षा को गुणात्मक उन्नयन व इसे वैज्ञानिकता प्रदान करने के लिए हमें ऐसी पद्धिति की व्यवस्था करनी होगी जो शिक्षा को सभी व्यक्तियों की देहरी तक ले जा सके और वह पद्धति है– सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का शिक्षा में प्रयोग। निःसंदेह आज विद्यालयों में इस बात की अति आवश्यकता है कि शारीरिक और मानसिक रूप से हम अपने आप को तैयार रखें। यदि हमें कुछ कर दिखाना है तो हमें विज्ञान के साथ चलना होगा।

lwpuk ,oa lapkj izkS|ksfxdh%

वर्तमान युग विज्ञान का युग है। विज्ञान के प्रभाव से ही मानव पक्षी की तरह आकाश में उड़ता है, तथा मछली की भांति अथाह सागर में तैरता है। सूचना एवं संचार साधनों के माध्यम से सम्पूर्ण संसार एक परिवार की भांति नजर आता है। अर्थात् सिमटता हुआ संसार दिखाई देता है। वर्तमान युग में सूचना एवं संवेग तीव्र गति से विश्व के एक कोने से दूसरे कोने तक प्रसारित हो रहे है आज संचार साधनों से सूचनाएं पहुंचाना सरल एवं सुगम ही

* izkpk;kZ] [k.Msyoky f'k{kk ikFkfed egkfo|ky;] Hkjriqj] jktLFkkuA

नहीं बल्कि इससे समय और धन की बचत भी होती है। सूचनाओं का प्रसारण वृहद स्तर पर करने के लिए इन बहुआयामी साधनों का प्रयोग किया जाता है। संचार के साधन टेलीफोन, मोबाईल, ई–मेल, इन्टरनेट, कम्प्यूटर, टेलीप्रिन्टर, दूरदर्शन इत्यादि साधनों से अभूतपूर्व क्रान्ति दृष्टिगत होती है। मोबाईल के द्वारा त्वरित गति से सूचनाओं का संचार करने से ऐसा प्रतीत होता है कि आज ''कर लो दुनिया मुठ्ठी में''। कम्प्यूटर, इन्टरनेट, ई–मेल, ई–गवर्नस, ई–कॉमर्स, ई–एजूकेशन, मोबाइल और भी न जाने कितनी ऐसी प्रणालियां हैं, जिन्होंने मनुष्य के जीवन को न केवल सुगम बनाया है अपितु श्रम शक्ति के समुचित व अधिकतम उपयोग का मार्ग भी प्रशस्त किया है। भूमण्डलीकरण और वैस्वीकरण के इस युग में सूचना व संचार प्रौद्योगिकी से शिक्षा जगत् पूर्णतः प्रभावित है। आज के बालक को वैज्ञानिक, व्यावसायिक और व्यावहारिक शिक्षा की नितांत आवश्यकता है। इस आवश्यकता की पूर्ति हेतु प्रौद्योगिकी के इन साधनों का समावेश और प्रयोग विद्यालयी शिक्षा के पाठ्यक्रम में अपेक्षित है।

lwpuk ,oa lapkj izks|kfxdh ds lk/ku%

सूचना एवं संचार के साधनों से तात्पर्य है कि वैज्ञानिक तकनीकी के ऐसे साधन (मशीनें) जिनके माध्यम से त्वरित गति से सूचनाओं का आदान–प्रदान होता है। प्रौद्योगिकी शब्द अंग्रेजी के Technology (तकनीकी) का समानार्थक है, जब वैज्ञानिक ज्ञान का कलात्मक या व्यावहारिक प्रयोग ही तकनीकी कहलाता है। औद्योगिकी क्षेत्र में सबसे पहले प्रयुक्त ये साधन आज सभी क्षेत्रों के आधार स्तम्भ बन चुके हैं, इनके निम्न साधन हैंः

- टेलीप्रिन्टर, फैक्स, फेसिमल
- टेलीविजन, रेडियो
- कम्प्यूटर
- इन्टरनेट
- ई–मेल
- मोबाइल, पेजर, वायरलेस सेट
- लैपटॉप
- उपग्रह
- टेलीकॉन्फ्रसिंग

lwpuk ,oa lapkj izks|kfxdh dh f'k{kk ds {ks= esa mi;ksfxrk%

सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी के परिणाम आज शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक रूप से प्रभावशाली परिवर्तन होते है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी को अति–आवश्यक मानकर इसका विकास विभिन्न देशों में लगातार किया जा रहा है। जॉन लीपम–"kf{kd izks|kfxdh dk iz;[k mn~ns'; f'k{k.k o vf/kxe esa vk/kqfud fof/k;ksa o izks|kfxdh dk dk;ZØe) iz;ksx djuk gSA ;g f'k{kd dh ijEijkxr rFkk mHkjrh gqbZ Hkwfedkvksa dk ewy djokrh gSA

शिक्षण अधिगम को सकारात्मक रूप से प्रभावित करने वाली सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकी की उपयोगिता निम्न प्रकार से महत्वपूर्ण हैः

- **f'k{kd ds fy, mi;ksfxrk%** सूचना एवं सम्प्रेषण संचार प्रौद्योगिकी का प्रभाव शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया पर पड़ता है। वह सीखने के सिद्धान्तों के स्थान पर शिक्षण के सिद्धान्तों पर अधिक महत्व देता है। यह बात शिक्षण के प्रतिमान में वर्णित है।
- **lh[kus ds {ks= esa mi;ksfxrk%** सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी शिक्षण में प्रभाव लाकर सीखने की परिस्थितियों को सरल बनाने में सहायता प्रदान करती है। सीखने की परिस्थितियों में भी वह प्रभावशाली भूमिका का निर्वाह करती है। इसके अन्तर्गत विद्यार्थियों की रूचियों एवं रूझानों का विशेष ध्यान रखा जाता है।
- **lekt ds fy, mi;ksxh%** सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी समाज के लिए शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करती है। इसके द्वारा शिक्षा का प्रसार घर–घर में आसानी से किया जा सकता है। सीमित साधनों वाले देशों में जन शिक्षा (Mass Education) के रूप में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी बहुत सहायता करती है। आज जन–साधारण के पास रेडियो, ट्रान्जिस्टर, टेपरिकॉर्ड, टेलीविजन, कम्प्यूटर आदि है। इन सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के साधनों को शिक्षा के प्रचार–प्रसार में काम लिया जा सकता है। समाज के प्रत्येक भाग के इन साधनों के माध्यम से शिक्षक का, महान नेता का, संत का, समाज सुधारक का विचारपूर्ण भाषण पहुंचाया जा सकता है। इनकी सहायता से समाज के लिए उपयोगी ज्ञान, संचय आसानी से किया जा सकता है।

अतः वर्तमान शिक्षा के क्षेत्र में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का प्रभावशाली ढंग से प्रयोग कर शिक्षा की प्रगति में अपेक्षित रूप से बदलाव किया जा सकता है।